

गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों द्वारा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास

Roshan Nain*

PGT in Political Science, Government Girl Senior Secondary school Kalwan, Jind, Haryana

शोध-आलेख सार: पाषाण युग से आधुनिक युग तक की मनुष्य की विकास यात्रा में अनेक युद्धों का अस्तित्व रहा है। लेकिन मनुष्य ने संघर्ष के साथ-साथ शान्ति को भी महत्व दिया है। दो विश्वयुद्धों ने मानव को युद्ध की विभिन्निका से बचने के लिए सोचने को विवश कर दिया है। इन युद्धों के पीछे शस्त्र की होड़ ही प्रमुख कारण थी। आज बुद्धिजीवी वर्ग ने शस्त्र नियंत्रण व निःशस्त्रीकरण के द्वारा विश्व शक्ति के विचार को सुदृढ़ बनाने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रेरित किया है। तीसरे विश्वयुद्ध के खतरे से बचने के लिए निःशस्त्रीकरण के सिवाय हमारे सामने कोई विकल्प नहीं है।

मूलशब्द: मानवता, युद्ध, शान्ति, सम्मेलन, शस्त्र, सन्धि, परमाणु, आण्विक।

-----X-----

निःशस्त्रीकरण का शाब्दिक अर्थ है, शारीरिक हिंसा के प्रयोग के समस्त भौतिक तथा मानवीय साधनों का उन्मूलन।¹ यह एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य हथियारों के अस्तित्व और उनकी प्रकृति से उत्पन्न कुछ विशिष्ट खतरों को कम करना है। मॉर्गेंथोउ के अनुसार, “निःशस्त्रीकरण कुछ या सभी शास्त्रों में कटौती या उनको समाप्त करना है ताकि शस्त्रीकरण की दौड़ का अन्त हो।”²

निःशस्त्रीकरण की अवधारणा इस बात पर आधारित है कि शस्त्रास्त्र सैन्य बलों का विघटित कर देने तथा आयुधों को समाप्त कर देने पर ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण विकसित होगा, जिसमें युद्ध के स्थान पर शान्ति के लिए महत्वपूर्ण स्थान होगा। इस प्रकार - “निःशस्त्रीकरण इस महाविनाश को रोकने का एक प्रयास है जो युद्ध के रूप में अभिव्यक्ति प्राप्त करता है और जिससे सम्पूर्ण मानवता को हानि होती है।”

निःशस्त्रीकरण की समस्या वर्तमान युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है, लेकिन फिर भी यह पूर्णतया एक नूतन समस्या नहीं है, क्योंकि इसकी चर्चा ग्रेथियस ने 16वीं सदी में ही कर दी थी और 1916 ई० में अलेक्जेंडर प्रथम (रूस के सम्राट) ने भी सभी प्रकार की सशस्त्र सेनाओं के एक साथ कमी का प्रस्ताव रखा था।³ इस दिशा में राष्ट्र संघ ने भी अनेक गंभीर, परन्तु अधिकांशतः असफल प्रयास किए थे, फिर भी विश्व के राजनीतिज्ञों ने निःशस्त्रीकरण के पक्ष में मांग उठाई है, जिनमें गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

प्रथम विश्वयुद्ध में अस्त्र-शस्त्र की मारक एवं संहारक क्षमता इस कदर बढ़ गई थी कि विश्व राजनीतिज्ञों का चिंतित होना स्वाभाविक था। द्वितीय विश्वयुद्ध में आधुनिक बमों व अन्तः महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों आदि के विकास ने युद्ध को भयावह बना डाला। संप्रति परमाणु हथियारों की विनाशकारी विभीषिका के मद्देनजर प्रख्यात वैज्ञानिक आईसटार्न को कहना ही पड़ा कि “यदि तृतीय विश्वयुद्ध परमाणु हथियारों से लड़ा गया तो मानव सभ्यता मूल रूप से नष्ट हो जायेगी और इसके बाद आगामी कोई भी युद्ध पत्थरों और लाठियों से ही लड़ा जाएगा।”⁴ शस्त्र-होड़, शस्त्र व्यापार एवं शस्त्र प्रसार विनाशकारी युद्ध का प्रमुख कारण रहे हैं और इनकी परिणिति प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध में देखने को मिली है।

भारत के प्रधानमंत्री- पं० नेहरू ने समय-समय पर यूरोपियन राष्ट्रों की प्रपंचपूर्ण राजनीति और आणविक शस्त्रों के परिणामस्वरूप संभावित खतरे से एशियाई राष्ट्रों को निरन्तर सावधान करने का प्रयत्न किया था। अकारण ही एशिया, यूरोप और अमेरिका के राष्ट्रीय हितों के लिए संघर्ष स्थल न बने, यह उनकी अदम्य अकांक्षा थी।

एक तरह से गुटनिरपेक्षता की नीति इन ‘तृतीय विश्व’ के राष्ट्रों के लिए ऐसी लक्ष्मण रेखा थी जिसकी तुलना अमेरिका द्वारा अपनाई गई ‘मुनरो नीति’ से की जा सकती है। स्वर्गीय नेहरू ने इसके औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा भी था कि “संघर्ष यूरोप की वसीयत है। एशिया में कम-से-कम इस समय तो ऐसी कोई परम्परा नहीं है। यदा-कदा एशियाई राष्ट्रों में

अपने पड़ोसियों से झगड़ा हो सकता है किन्तु मूलतः इनके संघर्ष में कूदना भारत और एशिया के लिए बड़ी भूल होगी।”⁵

निःशस्त्रीकरण शान्ति के उपकरण के रूप में जाना जाता है।⁶ जिसका उद्देश्य राष्ट्रों के मध्य होने वाले युद्ध के विनाशकारी साधनों को समाप्त कर देना है। वर्तमान समय में घातक शस्त्रास्त्रों के भण्डार देखकर यह कल्पना की जा सकती है कि उनके प्रयोग से चन्द्र मिनटों में व्यापक स्तर पर जन-धन का विनाश सम्भव है। सम्प्रति इसी परिप्रेक्ष्य में लार्ड ग्रे की वाणी बिल्कुल सटीक लगती है कि “यदि सभ्यता शस्त्रास्त्रों का नाश नहीं कर सकती है तो शस्त्रास्त्र सभ्यता का नाश अवश्य कर देंगे।”⁶

शस्त्र-होड़ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को भंग कर युद्ध की संभावना को प्रबल बनाती है, जिससे व्यापक जन विनाश होता है। क्लोड ने इस बारे में उचित ही कहा है- “शस्त्रों से राष्ट्र नेताओं को युद्ध में कूदने का प्रलोभन हो जाता है।”⁷ ‘नाम’ का मानना है कि यदि शस्त्रीकरण पर किया गया पैसा जनकल्याणार्थ एवं सृजनात्मक विकास कार्यों में प्रयोग किया जाए तो बहुत सी मानवीय समस्याओं का निदान हो सकता है। इतना ही नहीं शस्त्रीकरण से आर्थिक विकास सम्बन्धी मार्गों में रुकावट आने के साथ-साथ विश्व के इन विकासशील राष्ट्रों में आपसी हस्तक्षेप का मार्ग भी प्रशस्त होता है। इन कारणों के अलावा ‘नाम’ का मानना है कि शस्त्रीकरण मानवता तथा नैतिकता के भी खिलाफ है।

लगभग सभी गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने हमेशा उद्जन अस्त्र-शस्त्रों के परीक्षण, एकत्रीकरण और प्रयोग का विरोध किया है। वे इस सम्बन्ध में महासभा के सम्मुख अनेक प्रस्तावों को लाये हैं जिनका उद्देश्य “पूर्ण तथा सामान्य निःशस्त्रीकरण” के पक्ष में हैं। उन्होंने शस्त्रों को उत्तरोत्तर कम करना उचित माना है। पश्चिमी देशों का गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों पर यह गम्भीर आरोप है कि वे पश्चिमी और साम्यवादी गुट के द्वारा किये गए उद्जन परीक्षणों में दोहरे माप दंड का प्रयोग करते हैं। सन् 1961ई० का बेलग्रेड सम्मेलन “अस्तित्वमय” परीक्षण रोक “मोरेटोरियम” का सोवियत संघ द्वारा उल्लंघन होने पर सोवियत संघ की आलोचना नहीं कर पाया। स्टीवेन्सन ने कहा कि “क्रेमलिन के निर्णय ने गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों में उस प्रकार की उत्तेजना को जन्म नहीं दिया जिसकी आशा की जाती थी।”⁸ ऐसा प्रतीत होता है कि गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों ने क्रेमलिन के व्यवहार को संयुक्त राज्य द्वारा भूमि के अन्तर्गत किये गये परीक्षणों के समान ही माना। गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों की प्रतिक्रिया यह थी कि सोवियत निर्णय उतना ही बुरा था जितना कि गोट्टानामों खाड़ी में अमेरिका का सैनिक अड्डा। वास्तव में यह सैनिक अड्डा

अमेरिकन साम्राज्यवाद का प्रतीक है जो सोवियत सम्बन्धी निर्णय से अधिक खतरनाक है। तथापि, गुट निरपेक्ष राष्ट्रों ने संयुक्त राज्य का ध्यान सोवियत परीक्षणों के सम्बन्ध में अपनी स्पष्ट आलोचना के प्रति आकर्षित किया। मार्शल टीटो ने सोवियत परीक्षण को “पाश्विक” कहा तो दूसरी ओर पं० नेहरू ने इस परीक्षण को “अत्याधिक हानिकारक, विनाशकारी युद्ध... मनोवैज्ञानिकता को जन्म देने वाला बताया।” यद्यपि ‘मोरेटोरियम’ का सबसे पहले उल्लंघन फरवरी 1961 में फ्रांस ने किया। क्यूबा संकट के सम्बन्ध में गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों ने एक उदार दृष्टिकोण को अपनाया और इन राष्ट्रों का यह मत था कि सोवियत संघ और साम्यवादी चीन का बहिष्कार करके कुछ भी लाभ नहीं हुआ। निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र में गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों का अन्तिम लक्ष्य एक प्रभावकारी परीक्षण विरोधी सन्धि को जन्म देना है जो सभी प्रकार के उद्जन विस्फोटों को समाप्त कर दे। सोवियत संघ इस दृष्टिकोण से सहमत था। यह सोवियत संघ ही था जो निःशस्त्रीकरण समिति में गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के प्रतिनिधित्व के लिये लड़ा। फलस्वरूप अठारह सदस्यीय निःशस्त्रीकरण समिति में ब्राजील, बर्मा, इथोपिया, भारत, मेक्सिको, नाइजीरिया, स्वीडन और संयुक्त अरब गणराज्य सदस्य रूप में सम्मिलित किये गए।⁹ इन राष्ट्रों ने “निरीक्षण और नियन्त्रण के लिए एक प्रभावकारी व्यवस्था को जन्म देने की मांग की जिसमें उनके प्रतिनिधि भी सम्मिलित होंगे। 1 नवम्बर 1961 में महासभा ने यह भारतीय प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि उद्जन परीक्षणों पर जब तक कोई समझौता न हो जाय तब तक इनको बन्द ही रखा जाये। एक अन्य प्रस्ताव में महासभा ने यह कहा कि यदि किसी देश द्वारा उद्जन शस्त्रों का प्रयोग किया गया तो इसे संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र का उल्लंघन माना जायेगा। सन् 1962ई० में विदेश मंत्रियों के सम्मेलन को निःशस्त्रीकरण प्रयासों में कोई सफलता नहीं मिली। इसी समय जेनेवा में निःशस्त्रीकरण आयोग का सम्मेलन हुआ जिसमें भारत की ओर से प्रस्ताव किया गया कि आणविक परीक्षणों का पता लगाने के लिए गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के स्टेशन स्थापित किये जाये।¹⁰ गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के प्रयासों ने और क्यूबा संकट के तृतीय विश्व युद्ध में परिणीत हो जाने की सम्भावना ने 25 जुलाई 1963 को “सीमित परमाणु प्रतिबन्ध सन्धि” के जन्म को सम्भव बनाया। इसे तत्काल ही लगभग सौ राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया। सन्धि के अन्तर्गत सोवियत संघ, संयुक्त राज्य और ब्रिटेन ने स्वीकार कर लिया कि वे अपने क्षेत्र व नियन्त्रण के अन्तर्गत-बाह्य, आन्तरिक-प्रादेशिक या वायुमंडल में कोई भी आणविक विस्फोट नहीं करेंगे। इस सन्धि ने निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया लेकिन मार्च 1964ई० का जेनेवा सम्मेलन विफल रहा।¹¹

गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के नई दिल्ली शिखर सम्मेलन (मार्च 1983ई०) में अपने भाषण के दौरान भी भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने शान्ति की अपरिहार्यता पर बल देते हुए कहा था “शान्ति खतरे में है। शस्त्रों की निरन्तर बढ़ती दौड़ से मानव जाति का अस्तित्व खतरे में है।”¹² सम्मेलन के दौरान जारी संदेश में कहा गया था “विश्व निरन्तर विक्षुब्ध तथा असुरक्षित है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध आज भी असमान, अन्यायपूर्ण तथा शोषण से परिपूर्ण हैं। हम महान राष्ट्रों से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने शस्त्र-दौड़ को रोकें ताकि सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्र शान्तिपूर्ण वातावरण में अपने विकास के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।”¹³ इसी तरह हरारे शिखर सम्मेलन (सितम्बर 1986 ई०) में भी निःशस्त्रीकरण के पक्ष में अवाज उठाई गई। इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में सितम्बर 1992 ई० में सम्पन्न शिखर सम्मेलन के दौरान जारी घोषणा-पत्र में विश्व आर्थिक व्यवस्था में कुछ विश्व सैनिक व्यय के नकारात्मक प्रभाव पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सदस्य राष्ट्रों से कहा गया कि निःशस्त्रीकरण तथा शस्त्रों की कमी को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि बचे साधनों को सभी राष्ट्रों, विशेषतया विकासशील राष्ट्रों के आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयुक्त किया जा सके। इस सम्मेलन में भारत ‘नाम’ का ध्यान क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य से हटकार समस्त विश्व में परमाणु शस्त्रों की समाप्ति पर केन्द्रित करने में सफल हुआ।¹⁴ विकासशील अपरमाणु राष्ट्रों पर लगाए गए अन्यायपूर्ण प्रतिबन्धों के द्वारा परमाणु अप्रसार सन्धि के अन्तर्गत थोपी गई वचनबद्धता का पालन करवाये जाने पर खेद व्यक्त किया गया। कार्टेगना शिखर सम्मेलन (अक्टूबर 1995ई०) के दौरान विश्व के विभिन्न भागों में परमाणु शस्त्र-विहीन क्षेत्रों की स्थापना का समर्थन किया गया तथा इसे परमाणु निःशस्त्रीकरण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक आवश्यक कदम माना गया। इसके साथ ही इस शिखर सम्मेलन में सार्वभौमिक तथा पूर्ण निःशस्त्रीकरण को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर प्राप्त करने की मांग का भी समर्थन किया गया।¹⁵

डरबन शिखर सम्मेलन (सितम्बर 1998ई०) में सदस्य राष्ट्रों का ध्यान और वार्तालाप तीन मुख्य मुद्दों -शान्ति, निःशस्त्रीकरण तथा विकास पर केन्द्रित रहे। सम्मेलन में परमाणु निःशस्त्रीकरण की दिशा में अत्यन्त धीमी प्रगति पर चिन्ता प्रकट की तथा यह कहा गया कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद परमाणु शस्त्रों, परमाणु-निवारक धारक तथा सैनिक गठबन्धनों की नीतियों का कोई औचित्य नहीं रह गया।¹⁶ परमाणु निःशस्त्रीकरण के उद्देश्य की पूर्ति सभी द्वारा विश्व स्तर पर की जाने की नितांत आवश्यकता है। CTBT का भी सब राष्ट्रों द्वारा पालन होना चाहिए तथा रेडियाधर्मी व परमाणु

शस्त्रों के लिए प्रयोग किए जाने वाले पदार्थों के सम्बन्ध में सम्मेलन आरम्भ किया जाना चाहिए। इससे ही परमाणु निःशस्त्रीकरण की दिशा में सकारात्मक पहल की जा सकती है।

सम्मेलन के दौरान जारी घोषणा पत्र में परमाणु शस्त्रों की शीघ्रता से समाप्त करने हेतु एक अन्तर्राष्ट्रीय बैठक करने की मांग को जोरदार तरीके से उठाया गया। इस घोषणा में यद्यपि भारत तथा पाकिस्तान द्वारा किये गए परमाणु परीक्षणों का नाम नहीं लिया गया तथापि विस्फोटों द्वारा उत्पन्न दक्षिण एशिया में नई जटिलताओं को नोटिस में लिया गया।¹⁷ इस बात को एक सकारात्मक संकेत माना गया कि इस क्षेत्र के राष्ट्रों ने धैर्य से काम लेने का वचन दिया है, ताकि सुरक्षा बनी रहे। इस सम्मेलन में भारतीय नेतृत्व विश्व स्तर पर सभी द्वारा एक समयबद्ध कार्यक्रम के आधार पर परमाणु निःशस्त्रीकरण किये जाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध एकमत तथा एकजुट होकर सामूहिक उपाय अपनाने जाने की अपनी मांग को स्वीकार करवाने में सफल रहा।

कुआलालम्पुर शिखर सम्मेलन (फरवरी 2003ई०) के दौरान निःशस्त्रीकरण को विश्व की अपरिहार्यता घोषित किया गया। इराक पर ‘नाम’ के वक्तव्य में यह दर्ज किया गया कि दाक के सम्बन्ध में चल रहे निःशस्त्रीकरण प्रयासों को अपने आप में ध्येय नहीं समझा जाना चाहिए, अपितु इनके बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा पास प्रस्ताव 687 के अधीन लगाए गए प्रतिबन्धों की समाप्ति का कार्य किया जाना चाहिए।¹⁸ इसके साथ ही यह भी आह्वान किया गया कि किसी भी संकट का समाधान शान्तिपूर्ण ढंग से करना चाहिए तथा पश्चिमी एशिया में अति मारक शस्त्र रहित क्षेत्रों की स्थापना की जानी चाहिए।

गुट निरपेक्ष राष्ट्रों का क्यूबा की राजधानी हवाना में सम्पन्न 14वें शिखर सम्मेलन (सितम्बर 2006ई०) के सत्र को सम्बोधित करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने लगभग चार दशक पुराने इस संगठन द्वारा सार्वभौमिक परमाणु निःशस्त्रीकरण हेतु कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिये जाने के साथ इसे वर्तमान समय की एक मूलभूत आवश्यकता स्वीकार किया।¹⁹

यद्यपि आदिकाल से ही संघर्ष के साथ-साथ शान्ति की स्थापना पर जोर दिया जाता रहा है। राष्ट्र संधि, संयुक्त राष्ट्रसंघ और अन्य अन्तराष्ट्रीय संगठनों में निःशस्त्रीकरण के समर्थन में प्रस्ताव पारित होते रहे हैं। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों निःशस्त्रीकरण को जोरदार समर्थन किया है। इसके बावजूद भी निःशस्त्रीकरण की दौड़ लगी हुई है। इसका कारण,

निःशस्त्रीकरण की समस्या वास्तव में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी एक अहम् समस्या है जब तक राष्ट्रों को यह विश्वास नहीं हो जाता कि वे शस्त्रीकरण के बिना भी अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और हितों की रक्षा कर सकते हैं तब तक निःशस्त्रीकरण का स्वप्न यथार्थता में परिणित नहीं हो सकता।

सन्दर्भ सूची:

1. बी.एल. फाड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ० 515.
2. वही, पृ० 515.
3. पायनियर, 17 सितम्बर, 2006, नई दिल्ली।
4. एम. एस. राजन्, स्टडी ऑन नॉन अलायमेंट एण्ड दि नॉन अलायनमेंट मूवमेंट: थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, ए.बी.सी. पब्लिशिंग हाऊस, न्यू दिल्ली, 1986. पृ० 92.
5. नान सुधीर, भारत की विदेश नीति, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1976, पृ० 70.
6. सरला मौर्या एवं गुलाब चन्द्र ललित, शांति का उपकरण: निःशस्त्रीकरण, प्रतियोगिता दपर्ण, नईवेद दिल्ली, जून 2008, पृ० 1990
7. महेन्द्र कुमार, थ्योरिटिकल असपैक्ट्स ऑफ इण्टरनेशनल पॉलिटिक्स, शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1984, पृ० 76.
8. वही, पृ० 78.
9. टाइम्स आफ इण्डिया, नवम्बर 18, 1961.
10. विस्तृत अध्ययन के लिए, द यू एस एस आर फारिन पॉलिसी स्क्राइब तृतीय नवम्बर 1961, पृ० 2-5.
11. वही, पृ० 6.
12. वही, पृ० 6.
13. दि हिन्दू, 12 मार्च, 1983, नई दिल्ली.
14. वही

15. यू.आर.घई एवं के.के. घई इण्टरनेशनल पॉलिटिक्स, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कंपनी, जालन्धर, 2010, पृ० 289.
16. दीर्घपाल सिंह भण्डारी एवं दीपेन्द्र सिंह तोपवाल, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अतीत से भविष्य तक, प्रतियोगिता दपर्ण, नई दिल्ली, दिसम्बर 2006, पृ० 837.
17. बी.एल. फाड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पूर्वोद्धत, पृ० 187.
18. वही, पृ० 187
19. दि ट्रिब्यून, 26 फरवरी, 2003, चण्डीगढ़.
20. गिरिश चन्द्र पाण्डेय, प्रधानमंत्री की हवाना यात्रा, प्रतियोगिता दपर्ण, नई दिल्ली, दिसम्बर 2007, पृ० 1026.

Corresponding Author

Roshan Nain*

PGT in Political Science, Government Girl Senior Secondary school Kalwan, Jind, Haryana

spnain.22@gmail.com